चरण–1: छंटाई मई–जून में अंतिम कटाई के बाद होनी चाहिए।

चरण–2: मुख्य तने पर उगने वाली शाखाओं को हटा देना चाहिए।

चरण–3: चुनिंदा पुरानी शाखाओं को नीचे से हटा दें।

चरण–4: शाखाओं को वापस मूल तने में काटें।

चरण–5: प्रति मुख्य शाखा में केवल 1–2 उप–शाखाएँ छोड़ते हुए अधिकतम 50 मुख्य शाखाएँ रखें।

चरण–6: फलों के उत्पादन और सितंबर–अक्टूबर में फूल आने के लिए तैयार आकार को बनाए रखने के लिए छंटाई की आवश्यकता होती है।

खाद एवं उर्वरक

अधिक उत्पादन लेने के लिए प्रत्येक पौधे को अच्छी सड़ी हुई 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद देनी चाहिए। इसके अलावा लगभग 250 ग्राम नीम की खली, 30–40 ग्राम फोरेट एवं 3 मिली. प्रति लीटर क्लोरपाईरीफास प्रत्येक गड्ढे में अच्छी तरह मिला देने से पौधों में मृदाजनित रोग एवं कीट नहीं लगते हैं। 50 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण बनाकर पौधों को फूल आने से पहले अप्रैल में फल विकास अवस्था तथा जुलाई–अगस्त और फल तुड़ाई के बाद दिसबंर में देना चाहिए।

सिंचाई

इस फल के पौधों को दूसरे पौधों की तुलना में कम पानी की आवश्यकता होती है। इस प्रकार रोपण, फूल आने एवं फल विकास के समय तथा गर्म व शुष्क मौसम में बार–बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके लिए सिंचाई की बूंद–बूंद पद्धति का उपयोग करना चाहिए।

कीट एवं व्याधियाँ

सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट में कीट और व्याधियों का प्रकोप कम होता है। फिर भी इसमें एंथ्रेक्नोज रोग व थ्रिप्स कीट का प्रकोप देखा गया है। एंथ्रेक्नोज रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब दवा के घोल का 0.25 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें। थ्रिप्स के लिए इमिडाक्लोरपिड 17.8 SL @ 0.2 मिली. / लीटर पानी का 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव करना चाहिए।

तुड़ाई

प्रायः ड्रैगन फ्रूट प्रथम वर्ष में फल देना शुरू कर देता है। सामान्यतः मई और जून में फूल लगते हैं तथा जुलाई से दिसंबर तक फल लगते हैं। पुष्प आने के एक महीने बाद फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस अवधि के दौरान इसकी 6 तुड़ाई की जा सकती है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई का सही समय रंग परिवर्तित होने के तीन–चार दिनों बाद का होता है। फलों की तुड़ाई सिकेटियर या हाथ से की जाती है।

उपज

ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक सीजन में 3 से 4 बार फल देता है। प्रत्येक फल का वजन लगभग 300 से 800 ग्राम तक होता है। एक पौधे पर 50 से 120 फल लगते हैं। इस प्रकार इसकी औसत उपज 5 से 6 टन प्रति एकड़ होती है।

शैक्षणिक भवन

प्रशासनिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : +91–789746699
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/77

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ड्रैगन फ्रूट की उन्नत खेती की सम्भावनाएं

गोविन्द विश्वकर्मा, रंजीत पाल, सुकन्या मिश्रा एवं गौरव शर्मा

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ड्रैगन फ्रूट की उन्नत खेती की सम्भावनाएं

ड्रैगन फ्रूट कम वर्षा वाले क्षेत्र और पथरीली बंजर भूमि में एक नई फसल के रूप में किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह एक पौष्टिक फल है जिसके गूदे का उपयोग कई रुप में किया जाता है, जो पके फल का 70–80% भाग होता है। ड्रैगन फ्रूट बाहर से अनन्नास की भांति दिखाई देता है, लेकिन अन्दर मौजूद गुदे का रंग विभिन्न प्रकार का होता है। ड्रैगन फ्रूट मुख्य रूप से तीन रूपों में उपलब्ध है, सफेद गूदा लाल त्वचा वाली, लाल गूदा लाल त्वचा वाली और सफेद गूदा पीली त्वचा वाली। ड्रैगन फ्रूट की लाल गूदे वाली किस्में एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती हैं। यह पेट के कैंसर, मधुमेह को रोकने और भारी धातुओं जैसे विषाक्त पदार्थों को बेअसर करने के लिए जाना जाता है। कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप को भी कम करता है। यह संतरा, आम, पपीता, केला, सेब आदि की तुलना में अधिक पौष्टिक और फायदेमंद फल है जिसमे विटामिन सी, फास्फोरस और कैल्शियम की भरपूर मात्रा जाती है। फल का स्वाद कीवी फल जैसा होता है। इसके फल का टी एस एस 15–18 ^{0}B तथा कम वसा के साथ–साथ खनिजों से भरपूर होता हैं।इसकी त्वचा में हरे रंग की पंक्तियां होती हैं, जो ड्रैगन की तरह दिखाई देती हैं इसलिए इसको ड्रैगन फ्रूट के नाम से जाना जाता है।

विदेशी फल है ड्रैगन फ्रूट

ड्रैगन फ्रूट भारतीय फल नहीं है, लेकिन इसके लाजवाब स्वाद और लाभकारी फायदों के कारण भारत में भी इसकी मांग काफी बढ़ गयी है। यहीं वजह है कि हमारे देश में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में इसका सर्वाधिक उत्पादन किया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में इसकी खेती पर काफी जोर दिया गया है जो भविष्य में इस क्षेत्र के किसानों के लिए वरदान साबित होगा।

औषधीय गुण

ड्रैगन फ्रूट में अधिक मात्रा में विटामिन 'सी', फ्लेवोनोइड और फाइबर पाए जाने के कारण यह घावों को जल्दी भरने, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने एवं हृदय संबंधित समस्याओं से बचाने के साथ–साथ भोजन को पचाने में भी सहायक होता है। यह आंखों की दृष्टि में सुधार करने के साथ ही त्वचा को चिकना और नम रखता है। इसके नियमित सेवन से खांसी और अस्थमा से लड़ने में मदद मिलती है। इसमें विटामिन बी1, बी2 और बी3 पाए जाते हैं, जो ऊर्जा उत्पादन, कार्बोहाइड्रेट चयापचय, भूख बढ़ाने, खराब कोलेस्ट्रॉल, पेट के कैंसर और मधुमेह के स्तर को कम करने के अलावा कोशिकाओं को ठीक कर शरीर को मजबूती प्रदान करते हैं। दंत स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए भी इसको औषधीय रूप में प्रयोग किया जाता है।

सारणी: ड्रैगन फ्रूट के प्रति 100 ग्राम फल में पाए जाने वाले प्रमुख पोषक तत्व

पोषक तत्व	मात्रा	पोषक तत्व	मात्रा
नमी	85%	कार्बोहाइड्रेट	11.2 मि.ग्रा.
प्रोटीन	1.10 ग्राम	ग्लूकोज	5.70 मि.ग्रा.
वसा	9.57 मि.ग्रा.	कैल्शियम	10.20 मि.ग्रा
क्रूड फाइबर	1.34 मि.ग्रा.	आयरन	3.37 मि.ग्रा
ऊर्जा	67.70 किलो कैलोरी	विटामिन 'सी'	3.00 मि.ग्रा
विटामिन 'ए'	0.01 मि.ग्रा		

जलवायु :

इसके लिए 50 सेमी. वार्षिक औसत की दर से बारिश की जरूरत होती है जबकि 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके लिए उपयुक्त माना जाता है। बहुत ज्यादा सूर्य प्रकाश को इसकी खेती के लिए अच्छा नहीं माना जाता है। सूरज की रोशनी जिन इलाके में ज्यादा हो उन इलाकों में बेहतर उपज के लिए छायादार जगह में इसकी खेती की जा सकती है।

मिट्टी :

इस फल को रेतिली दोमट मिट्टी से लेकर दोमट मिट्टी तक विभिन्न प्रकार के मिट्टियों में उपजाया जा सकता है। हालांकि बेहतर जिवाश्म और जल निकासी वाली बलुवाई मिट्टी इसकी उपज के लिए सबसे बेहतर है। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 7 तक उपयुक्त माना जाता है।

खेत की तैयारी :

खेत की अच्छी तरह से जुताई की जानी चाहिए ताकि मिट्टी में मौजुद सारे खरपतवार खत्म हो जाएं। जुताई के बाद कोई भी जैविक कंपोस्ट अनुपातनुसार मिट्टी में दिया जाना चाहिए।

पौध प्रसारण

ड्रैगन फ्रूट का प्रसारण पौधे के वानस्पतिक भागों को टुकड़े में काटकर किया जाता है। बेहतर पौधे प्राप्त करने के लिए पूरे तने के खंड या 15–30 सेंटीमीटर परिपक्व कटाई के तने के हिस्से का उपयोग किया जाना चाहिए। रोगों को रोकने के लिए विशेष रूप से तना सड़न काटने के तुरन्त पश्चात् कवकनाशी के साथ इलाज किया जाना चाहिए और रोपण से पहले 5–7 दिनों के लिए, ठण्डे व सूखे क्षेत्र में रखा जाना चाहिए। जड़ वाली कलम नर्सरी में 30–40 दिनों के भीतर मुख्य खेत में रोपाई के लिए तैयार हो जाती है।

रोपण

इन पौधों को सुखे गोबर के साथ मिलाकर मिट्टी बालू और गोबर के 1:1:2 के अनुपात में मिलाकर रोप देना चाहिए। ये जरूर ध्यान रखा जाना चाहिए कि इन्हें रोपने से पहले इन्हें छाया में रखा जाए ताकि सूरज की तेज रोशनी ने इन पौधो को नुकसान न पहुंचे। इसके पौधो की बढवार के लिए सीमेंट–कंक्रीट, लोहे या बांस के खंम्बे की सहायता देनी पड़ती है। एक खंम्बे से दूसरे खंम्बे तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी लगभग 2–2.5 मी. X 3–4 मी. रखते है जो पर्याप्त वायु परिसंचरण प्रदान करती है और बीमारियों के होने की संभावना कम करती है। प्रत्येक खंम्बे के चारो तरफ मिट्टी में एक–एक पौधा लगाते है जिससे एक खंम्बे पर चार पौधे लगते है। इस प्रकार एक एकड़ में लगभग 2000–2100 पौधे लगते है। पौधों की रोपाई के बाद मिट्टी डालने के साथ–साथ कंपोस्ट और 100 ग्राम सुपर फास्फेट भी डालना चाहिए।

छंटाई

पौधों के आकार और प्रकार को बनाए रखने के लिए छंटाई की आवश्यकता होती है क्योंकि वे जल्दी से अनियंत्रित और ऊपर से भारी हो सकते हैं। छंटाई से पौधे की ऊँचाई कम होती है जिससे फलों की कटाई में सहायता करता है। कट कर अलग हुई शाखाओं को नष्ट करने में सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि उनमें खरपतवार उगने का डर बना होता है।